सेहत से खिलवाड़ का कारोबार

मुर्गी पालन उद्योग में एंटीबायोटिक का जिस पैमाने पर इस्तेमाल हो रहा है, उसका बुरा असर उन लोगों तक भी पहुंच रहा है, जो शाकाहारी हैं।

'पोस्ट-एंटीबॉयोटिक एरा' यानी एंटीबायोटिक के बाद का खतरनाक दौर अब दूर नहीं है। इसका अर्थ है वह समय, जब छोटे-मोटे जख्म या संक्रमण से ही किसी इंसान की मौत का खतरा हो। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) एंटीबायोटिक प्रतिरोध के मामले में इसी नतीजे पर पहुंचा है।

इस समय बड़ी तादाद में एंटीबायोटिक दवाइयां अपना प्रभाव खो रही हैं और यह संकट बढ़ता ही जा रहा है। एक तरफ तो हाल यह है कि मूत्र-नलिका, श्वसन-नलिका और पेट से जुड़े मामूली संक्रमणों का उपचार भी कठिन होता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ, सर्जरी के बाद सामान्य होने का सारा दारोमदार अब ऑपरेशन के बाद दी जाने वाली एंटीबायोटिक दवाइयों पर ही छोड़ दिया गया है। इन दिनों डॉक्टर किसी एंटीबायोटिक को लेने की सलाह देते वक्त उसके असर को लेकर अधिक आश्वस्त नहीं दिखाई पड़ते। निष्प्रभावी होने पर अक्सर उस एंटीबायोटिक की जगह दूसरी एंटीबायोटिक लेने की सलाह दी जाती है।

डी. श्रीनिवास

प्रसिद्ध चिकित्सक यह कहने से भी नहीं हिचकते कि आधुनिक दवाओं से हमें जो हासिल हुआ, हम उस सब को खो बैठेंगे, अगर मौजूदा एंटीबायोटिक्स को संरक्षित न रखा गया। यह सब एंटीबायोटिक प्रतिरोध के कारण हो रहा है। पहले जो एंटीबायोटिक दवाएं बैक्टीरिया को मार देती थीं, अब वही बैक्टीरिया उन्हें झेलने में सक्षम हैं। इस ओर कौन ले जा रहा है? दरअसल, यह एंटीबायोटिक दवाइयों के दुरुपयोग और जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल से हो रहा है। इनका अनियंत्रित इस्तेमाल वैसे पशुओं पर किया जा रहा है, जिनको हम खाते हैं।

इस समस्या की सीमा को समझने के लिए सेंटर फॉर साइंस ऐंड एनवायरमेंट (सीएसई) की पॉल्यूशन मॉनिटरिंग लैबोरेटरी में दिल्ली-एनसीआर स्थित मुर्गी फार्मों के 70 चिकन सैंपल इकट्ठा किए गए और उनमें आम तौर पर इस्तेमाल की छह एंटीबायोटिक्स के अंशों की जांच की गई। पाया गया कि 40 फीसदी नमूने पॉजिटिव हैं। 17 प्रतिशत में तो कई एंटीबायोटिक्स हैं। हैरत की बात यह थी कि सिप्रोफ्लोक्सासिन जैसी एंटीबायटिक्स भी मिली, जिसे डब्ल्यूएचओ ने इंसान के लिए खतरनाक घोषित कर रखा है। यह विभिन्न संक्रामक रोगों में भारत में व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाली एंटीबायोटिक है और यह दवा फ्लोरोक्वीनोलोन्स की श्रेणी से जुड़ी है, जो मल्टीड्रग-रेसिस्टेंस टीबी में महत्वपूर्ण मानी जाती है। कुछ देशों में मुर्गीपालन में इसका इस्तेमाल प्रतिबंधित है। एक और फ्लोरोक्वीनोलोन श्रेणी की एंटीबायोटिक है एनरोफ्लोक्सासिन, जो चिकन में सबसे अधिक मात्रा में पाई गई और इस पर भी कुछ देशों में पाबंदी है। हिलाकर रख देने वाली एक कड़वी सच्चाई यह थी कि सामान्य और गंभीर संक्रामक बीमारियों के लिए जिम्मेदार कई बैक्टीरिया चिकन में मौजूद एंटीबायोटिक्स के प्रतिरोधी पाए गए। ये अध्ययन पिछले एक दशक में देश भर में कई निजी और सरकारी अस्पतालों द्वारा किए गए।

सीएसई की टीम ने यह जानने का फैसला किया कि क्यों और कैसे ये एंटीबायोटिक्स इस्तेमाल होती हैं और हरियाणा से राजस्थान तक के मुर्गीपालन उद्योग में इनका

अमित खुराना
प्रोग्राम मैनेजर, फूड सेफ्टी ऐंड टॉक्सिन्स, सीएसई

इस्तेमाल होता है? एंटीबायोटिक दवाइयों का अंधाधुंध इस्तेमाल मुर्गीपालन उद्योग का हिस्सा है, ताकि चूजों को मीट के लिए जल्द से जल्द तैयार किया जा सके। इनके खाने में एंटीबायोटिक दवाइयों को मिलाया जाता है और 35-42 दिनों के इनके जीवन-चक्र में इसे लगातार जारी रखा जाता है। यह वजन बढ़ाने के लिए किया जाता है और यूरोपीय संघ के देशों में यह पूरी तरह से प्रतिबंधित है। इसके इस्तेमाल का दूसरा कारण है कि चूजों में संक्रमण को रोकना, यानी रोग के संकेत न मिलने के बावजूद उन्हें एंटीबायोटिक देते रहना। कई यूरोपीय देशों में इसे नियंत्रित तरीके से किया जा रहा है, लेकिन भारत में एंटीबायोटिक दवाएं बिना लेबल और लाइसेंस के मिल जाती हैं, इसलिए यह काम धड़ल्ले से होता है।

भारत के पास कोई नियामक ढांचा नहीं है, जो पशुओं में एंटीबायोटिक्स के दुरुपयोग को नियंत्रित करने के लिए सबसे जरूरी है। चिकन में एंटीबायोटिक की मात्रा देने के मानक भी तय नहीं हैं; पोल्ट्री के आहार पर किसी की नजर नहीं होती; बिना लाइसेंस वाली दवाइयों पर कोई नियंत्रण नहीं है; इसका भी अंदाजा नहीं कि एंटीबायोटिक्स की कितनी मात्रा इस्तेमाल हुई और इसके प्रतिरोधी रुझान क्या रहे? इस दिशा में काम करने वाले देश बहुत पहले ही इस पर रोक लगा चुके हैं। यहां यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि क्या यह समस्या सिर्फ चिकन और उसे खाने वालों तक सीमित है? इसका जवाब है कि यह यहीं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव इससे भी आगे पड़ रहा है। शाकाहारी भी समान रूप से खतरे के घेरे में हो सकते हैं। इसे समझाने के लिए समस्या की जड़ में जाना होगा।

खाद्य उत्पादक पशुओं में एंटीबायोटिक्स का इस्तेमाल एक से अधिक रास्तों से और कई माध्यमों से इंसान को प्रभावित करता है। चूजे को ही लीजिए। इनमें अधिक एंटीबायोटिक के इस्तेमाल से इनके पेट में प्रतिरोधी बैक्टीरिया का विकास होता है। यह ऐसे ही कई बैक्टीरिया को जन्म देता है। इस तरह से उस चूजे के शरीर में प्रतिरोधी बैक्टीरिया का भंडार हो जाता है। अब ये प्रतिरोधी बैक्टीरिया उस आदमी में जाता है, जो चिकन खाता है। प्रक्रिया यहीं नहीं थमती। एक विशेष एंटीबायोटिक के खिलाफ प्रतिरोध इंसान में समान या अन्य एंटीबायोटिक के खिलाफ प्रतिरोध को जन्म दे सकता है, जो कई दवाइयों के बेअसर होने का कारण बनता है। इसके अलावा, मीट के खाने से एंटीबायोटिक्स की कुछ मात्रा सीधे इंसान में प्रवेश कर जाती है, जो उसी प्रक्रिया को शुरू कर देती है, जो पहले उस पशु में जारी थी, यानी इंसान का शरीर भी प्रतिरोधी बैक्टीरिया का घर बन जाता है।

आबोहवा के जरिये ये प्रतिरोधी बैक्टीरिया उनमें जा सकते हैं, जो चिकन नहीं खाते या जो शाकाहारी हैं। मुर्गियों का अपशिष्ट, जो प्रतिरोधी बैक्टीरिया से भरा होता है, फार्म से मिट्टी और पानी के जरिये खाद्य-चक्र में प्रवेश कर जाता है। फिर ये बैक्टीरिया जमीन और पानी में अपना विस्तार करते हैं, कुछ वैसे ही, जैसे न्यू दिल्ली मेटैलो-बीटा-लैक्टामेज (एनडीएम-1) के मामले में साल 2011 में हमने देखा था। अध्ययन से यह भी पता चला है कि प्रतिरोधी बैक्टीरिया हवा में फैल सकता है और इंसान को प्रभावित कर सकता है। सीधा संपर्क एक और तरीका है, जिसमें प्रतिरोधी बैक्टीरिया उस आदमी में प्रवेश कर सकता है, जो मुर्गीपालन और बूचड़खानों से जुड़ा है।

सब कुछ ऐसे ही चलता रहा, तो प्रतिरोधी बैक्टीरिया की भरमार हमारे इर्द-गिर्द हो जाएगी। हमने तो इस अध्ययन से एक छोर को छुआ है। जरूरी है कि उन एंटीबायोटिक्स के इस्तेमाल पर पूरी तरह से पाबंदी लगे, जिनका इस्तेमाल चूजे का वजन बढ़ाने के लिए होता है और जो इंसान के लिए नुकसानदेह है। महामारी रोकने के लिए भी यह जरूरी है। एंटीबायोटिक्स दवाएं बिना लाइसेंस के बाजार में बेची न जाएं। सरकार को अच्छे और वैकल्पिक फार्म प्रबंधन के विकास के तरीकों को बढ़ावा देना चाहिए। चिकन उत्पादों में एंटीबायोटिक्स के मानक निर्धारित हों। पोल्ट्री उद्योग के लिए प्रदूषण नियंत्रण मानक विकसित किए जाने चाहिए। और सबसे अहम, इंसान और पशुओं में एंटीबायोटिक प्रतिरोध और एंटीबायोटिक उपयोग पर निगरानी रखने का एक तंत्र होना चाहिए। खतरे को कम करने के लिए यह सब जरूरी है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)